जैन श्रावकाचारों का समालोचनात्मक अध्ययन

अनिता राज

डॉ० विश्वनाथ चौधरी

जैन –धर्म भारत वर्ष में ही नंहीं वरन् विश्व में अपना महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। जैनियों की अहिंसक और रहस्यवादी दृष्टि समस्त विभिन्ताओं को स्वीकार करके चली है। उसमें किसी मत का निषेध नहीं किया गया है और न ही किसी भी विचार को निरपेक्ष सत्य के रूप में ही स्वीकार किया गया है। जैन–धर्म एकमात्र उसी मार्ग का निर्देश करता है जो आत्मा के निजस्वरूप की प्राप्ति में सहायक होता है।

जैन–धर्म का उद्‌भव ब्राह्मण–धर्म के पराभव का काल था। जैन दर्शन का जन्म ब्राह्मण–धर्म की परम्परागत रूढ़ियों, अन्ध–विश्वासों और मिथ्या कर्मकाण्डों की प्रतिक्रिया का ही परिणाम है। जैन–दार्शनिकों के पूर्व के समस्त भारतीय दार्शनिकों सम्बन्ध आदि अप्रत्यक्ष विषयों पर ही विचार किया था। किन्तु जैन दार्शनिक जीवन के व्यावहारिक धरातल को ही अपने अध्ययन विषय बनाकर चले हैं। उनका धर्म पारलौकिक न होकर प्रत्यक्ष जगत और मानव व्यवहार में ही निहित है। जैन–धर्म तर्क पर आधारित है, अन्धविश्वासों पर नहीं। यही कारण है कि सैकड़ों वर्षों के बाद आज भी अपनी उपयोगिता के कारण विश्वव्यापी बना हुआ है।